*संत ज्ञानेश्वर की मराठी रचना पसायदान से*

*चंद्रमे जे अलांछ्न। मार्तंड जे तापहीन।*
*ते सर्वांही सदा सज्जन। सोयरे होतु।।*

**Chandrame je alānchhan | mārtanḍa je tāpahīna |**
**te sarvānhī sadā sajjana | soyare hotu ||**

चंद्रमा जैसे तेजस्वी होने पर भी जिनके ऊपर कोई दाग नहीं है और सूर्य जैसे प्रखर (ज्ञानी) होने पर भी जो अहंकारयुक्त नहीं हैं, वे सर्वदा सज्जनता, करुणा और दया से युक्त होते हैं।

Those who are free of blemishes, even after being as glorious as the Moon; and devoid of ego, even after being enlightened with knowledge as the brightness of the Sun; are eternally kind people filled with love and compassion for all.

---

*चलां कल्पतरूंचे आरव। चेतना चिंतामणींचें गाव।*
*बोलते जे अर्णव। पीयूषाचे ।।*

**Calān kalpatarūnche ārava | cetanā cintāmaṇīcen gāva |**
**bolate je arṇava | pīyūṣāce ||**

जिनकी (संतों की, सज्जनों की) वाणी और शब्द अमृत के समान हैं, वे कल्पवृक्षों (सौभाग्य प्रदान करनेवाले देवी) के उद्यान तथा चेतनारूपी चिंतामणियों के गांव के समान हैं।

The utterances of sages are like an ocean of elixir; (to humanity) they are like a garden of Kal-pavriksha (wish-fulfilling divine tree) and abode of pearls of blessings of consciousness.

---

*दुरितांचे तिमिर जावो। विश्व स्वधर्म सूर्ये पाहो।*
*जो जे वांच्छिल तो तें लाहो। प्राणिजात।।*

**Duritānce timir jāvo | viśva svadharma sūryen pāho |**
**jo je vāncchil to ten lāho | prāṇijāta ||**

पापरूपी अंधकार को दूर करने के लिए विश्व स्वधर्म का सूर्य प्रदीप्त होते देखे। इस प्राणिजगत् में जो जिसकी कामना करे उसे वह प्राप्त हो।

May the darkness of sins be diminished from the minds of the sinners, and may the world witness the rise of the Sun of self-dharma (faith in righteousness). May every living being get, whatever (rightfully) they desire.

---

पसायदान संत ज्ञानेश्वर की मराठी रचना ज्ञानेश्वरी का एक अंश है। ज्ञानेश्वर 13वीं शताब्दी के एक महान् संत, कवि एवं दार्शनिक थे। वे नाथ और वारकरी परंपरा के योगी रहे। अपने 21 साल के छोटे से जीवन में, उन्होंने ज्ञानेश्वरी (श्रीमद्भगवद्गीता की भावार्थ दीपिका) और अमृतानुभव की रचना की। मानव–कल्याण को समर्पित पसायदान महाराष्ट्र की एक लोकप्रिय प्रार्थना है। पसायदान के कुछ पदों को अर्थ सहित यहां पाठकों के लिए प्रस्तुत किया गया है।